www.sarkaridoctor.com
www.fb.com/sarkaridoctor
sarkaridoctor@gmail.com

CONNECTING DOCTORS

May 2018 Edition
Rajasthan Module
Volume T1

बूस्टर डोज़

Sarkari Doctor Booster Dose

Inside this issue

01 - निपाह वायरस : मंडराता खतरा
02 - क्यों पिटते हैं रेजिडेंट डॉक्टर?
03 - MOHFW
04 - Coming days
05 - Knowledge
06 - Key person
07 - राजस्थान
08 - Medical College Arena
09 - Humour
10 - Doctor Wise (Tips)

निपाह वायरस : मंडराता खतरा

सबसे पहले इस वायरस की जानकारी 1998 में मलेशिया के काम्पुंग सुंगेई निपा में मिली थी। बाद में इस जगह के नाम पर ही इस वायरस को वहां के डॉक्टरों ने निपा नाम दे दिया (NiV)। मलेशिया में सुअरों में भी यह वायरस पाया गया था। 2004 में बांग्लादेश में भी इसके मरीज पाए गए थे। तब ये पता लगा था कि ताड़ी पीने की वजह से यह बीमारी फैल रही है। बाद में पता लगा कि इंसान से इंसान में भी यह वायरस पहुंचता है। हालांकि, यह पहला मौका है जब भारत में इसके केस सामने आए हों।केरल में इस वायरस के फैलने का शक होने पर कुछ मरीजों के ब्लड सैम्पल नेशनल वायरोलॉजी इंस्टीट्यूट पुणे भेजे गए। वहां से पता लगा कि यह निपा वायरस ही है। केरल सरकार की गुजारिश पर हेल्थ मिनिस्ट्री से तीन एक्सपर्ट्स की टीम केरल पहुंच गई है। निपाह वायरस एक जुनोटिक (पशुजन्य) बीमारी है और यह वायरस मनुष्यों का सम्पर्क निपाह संक्रमित सूअर, चमगादड़ या संक्रमित रोगी के साथ होने पर अथवा संक्रमित कच्चे खजूर या खजूर के रस के सेवन से फैलता है। इसके संक्रमण के मुख्य लक्षण में बुखार होना, सरदर्द, सांस लेने में तकलीफ, दिमाग में सूजन, खांसी, उल्टी होना, मांसपेशियों में दर्द, मानसिक भ्रम, दस्त व ऐंठन होना इत्यादि है। फिलहाल, इस वायरस से निपटने के लिए किसी तरह का वैक्सीन नहीं है। राजस्थान में निपाह वायरस के संबंध में विशेष सतर्कता बरतने के निर्देश दिए गए हैं। इस अलर्ट के बाद से निरन्तर मॉनीटरिंग एवं सतत निगरानी रखी जा रही है। इस बीमारी के संबंध में प्रदेश के सभी चिकित्सा अधिकारियों को आवश्यक जानकारी त्वरित उपलब्ध करवा दी गयी है।

मुख्य सचिव डीबी गुप्ता की अध्यक्षता में 26 मई को इस संबंध में बैठक आयोजित की गयी। चिकित्सा विभाग की ओर से बैठक में सूचित किया गया कि अब तक प्रदेश में निपाह वायरस से एक भी पीड़ित सामने नहीं आया है। परंतु मुख्य सचिव ने चिकित्सा विभाग द्वारा निपाह वायरस के प्रति विशेष सतर्कता बरतने एवं इस वायरस के बारे में आमजन को सही सूचना उपलब्ध कराने के साथ ही पूर्ण सक्रियता बरतने पर बल दिया।

निपा वायरस वास्तव में सबसे पहले चमगादड़ों में आता है। इसके बाद यह फलों यानी फ्रूट्स तक पहुंचता है। जब इंसान इन फलों का सेवन करता है तो ये उसके शरीर में पहुंच जाता है।
सुअरों या चमगादड़ों से दूर रहें। ताड़ी जैसे नशीले पदार्थों से बिल्कुल दूर रहें। जमीन पर गिरे फल ना खाएं। सांस लेने में दिक्कत या सिर में जलन या तेज दर्द होने पर डॉक्टर से संपर्क करें।

Important task to do

Submit ACR
Annual Confidential Report

संपादकीय

क्यों पिटते हैं रेजिडेंट डॉक्टर?

सबसे ज्यादा पढ़ा लिखा अगर कोई है तो वो चिकित्सक है, जो की मरीज देखना शुरु करने तक की अपनी पूरी जिन्दगी पढाई में लगा चुका होता है और आशा रखता है की अपनी इस मेहनत से अर्जित ज्ञान से वो पूरी उम्र जनसेवा करेगा, वो हर हालात में प्रयास करेगा की कैसे भी उसका मरीज ठीक हो।

खासकर रेजीडेंसी ऐसा वक़्त है जब चिकित्सक (रेजिडेंट) चौबीसों घंटे मरीजों से घिरा रहकर उनकी परेशानीयों को दूर करने और अपने स्किल डेवेलपमेंट के लिए रात दिन एक कर देता है, निश्चित रूप से उसको भी थकान, नींद, गुस्सा एवं डिप्रेशन आता होगा, लेकिन वो सभी इमोशन को पार करता हुआ मरीज सेवा में तल्लीन रहता है।

रेजीडेंसी अनेक विषयों में होती है लेकिन गंभीर मरीजों और आपातकाल वाले मरीजों से सामना कुछ विषय के रेजिडेंटस से ही होता है जैसे की मेडिसिन, ओर्थोपेडिक, सर्जरी, गायनिक आदि एवं इन्हीं डिपार्टमेंट में ही लड़ाई फसाद की घटनाएँ सामने आती हैं।

तो क्या ये रेजिडेंट डॉक्टर जान बूझकर भिड़ते हैं ?
ऐसा कदापि नहीं है, लेकिन सत्य है की आपातकाल वाले विभागों में मरीजों की संख्या भी ज्यादा होती है एवं काम का भार भी ज्यादा रहता है, साथ ही आपातकाल में वे मरीज आते हैं जो थोड़ी देर पहले ठीक ठाक होते हैं और अचानक किसी हादसे (अटैक/एक्सीडेंट) से मरीज बन जाते हैं और अस्पताल पहुँचते हैं, ये मरीज तुरंत पैनिक में आते हैं और इनके साथ आने वाले अटेंडेंट की हालत भी लगभग वैसी ही होती है, इनके साथ लोग भी काफी आते हैं और हर आदमी इनके साथ ही रहना चाहता है और वे अस्पताल के हर स्थान ओपीडी/इमरजेंसी/ओटी में साथ साथ जाना चाहते हैं जो की अस्पताल की व्यवस्था, सुरक्षा एवं सफाई के लिए दिक्कत खड़ी करते हैं और इसीलिए इन्हें बाहर रोका जाता है और प्रयास किया जाता है की मरीज के साथ एक या दो आदमी ही रहें।

लम्बी बीमारीयों से ग्रसित मरीज तो अस्पतालों के सिस्टम में ढल चुके होते हैं और वो सहजता से पेश आते हैं, उन्हें चिकित्सकों की मेहनत, पीड़ा और बोझ का अंदाजा भी हो चुका होता है साथ ही अस्पताल में कौनसी जांच होगी, कौनसी दवा मिलेगी, कितना वक़्त कहाँ लगता है, क्या कुछ बाहर से खरीदना है इन सबके लिए वे तैयार रहते हैं और इसीलिए ऐसे मरीज ज्यादा उलझते नहीं हैं।
मरीज का परिजन भी पर्ची कटवाने से लेकर, दवा लेने, जांच करवाने, अन्य रजिस्ट्रेशन करवाने, भीड़ में घिरने, पूरा सामान नहीं मिलने, इधर से उधर शिफ्ट करवाने, बेड ना मिलने, सफाई-दुर्गन्ध जैसे मामलों में खूब पीड़ित हो जाता है फिर वो सीधा ड्यूटी डॉक्टर से आमने सामने होता है और अगर उसे वहां भी उसे लगता है की उसे ढंग से एवं समयबद्ध नहीं देखा जा रहा है तो उसका और दिमाग घूमता है, वो तुलना करता है की अगर वो फलाने हॉस्पिटल में गया होता तो पता नहीं उसकी क्या सेवा हो रही होती, कुछ छुटभैये एवं तीतर किस्म के भी होते हैं जो फालतू में माहौल बनाते हैं, उग्र होते हैं एवं धौंस भी जमाते हैं, जब से फ्री मेडिसिन/जांच हुई हैं तब से तो इनके खूब भाव बढे हैं, कोई दवा अगर ऐन वक़्त पर उपलब्ध ना हो तो ये इस तरह दोषारोपण करते हैं की जैसे डॉक्टर की जेब में पैसा डाला गया था की वो दवा लेके क्यूँ नहीं बैठा है।

बहुत सी बार, समान्यतया रात को मरीज के साथ आने वाले अटेंडेंट नशे में भी देखने को मिलते हैं और इनका ठरका चिकित्सा मंत्री से कम नहीं होता है, यह भी एक कारण बनता है कई बार यानि की मरीज और उसके साथ वाले 'डॉक्टर-मरीज कार्य' के अलावा वाले बहुत से प्रशासनिक कारणों से तनाव में आते हैं और फिर यह पूरा ठीकरा उपलब्ध ड्यूटी डॉक्टर पर गिरता है और छोटी बहस एक बड़ी हिंसा का कारण भी बन सकती है, केवल डॉक्टर ने अपने कर्तव्य को ना निभाया हो और लड़ाई हुई हो ऐसा कम देखने में आता है, हालाँकि यह डॉक्टर के व्यव्हार और हेंडलिंग पर भी निर्भर करता है की कैसे विषम समय को टाला जाए, माना जाता है की इन सर्विस रेजिडेंट अनुभव के कारण फ्रेश रेजिडेंट से बेहतर हेंडलिंग करते हैं, लेकिन इस पर कोइ स्टडी नहीं हुई है।

खैर, विवादों से बचने के लिए अन्य प्रशासनिक सुधार भी आवश्यक हैं साथ ही सॉफ्ट स्किल्स का उपयोग करके भी एक हद तक बचा जा सकता है।

Editor
Sarkari Doctor

Scan me

POINT AND SHARE
Now, open Booster Dose Newsletter on your Smart-phone instantly by scanning this code.You will be guided instantly to our website, **www.sarkaridoctor.com**. This is useful to share our stories on social media or email them.

National Consultation on Ayushman Bharat: Operationalizing Health and Wellness Centres to deliver Comprehensive Primary Health Care

A two day national consultation conference on operationalizing the Health and Wellness Centres (HWC) for provision of Comprehensive primary health care under Ayushman Bharat was organized by the Ministry of Health and Family Welfare with technical support from the National Health Systems Resource Centre, recently. Participants included the Principal Secretaries and Mission Directors of NHM from states, National Knowledge Partners, representatives of the Innovation and Learning Centres for CPHC and development partners. The consultation was also chaired by Dr. Vinod Paul, Member, NITI Aayog, Smt Preeti Sudan, Secretary (Health) and Shri Manoj Jhalani, AS&MD.

States were asked to develop state specific action plans indicating timelines. In the first year of the implementation, States were urged to prioritize all PHCs as HWCs in the selected blocks and districts, where infrastructure and HR were already in place. Aspirational districts were to be prioritised. Concurrent strengthening of Sub Health Centres as HWC (HWC-SHC) would also be undertaken in a phased manner so as to meet the commitment of operationalizing 1,50,000 HWC by 2022. However, it was emphasized that the screening, prevention, control and management of non-communicable diseases, which is one of the packages of expanded services under CPHC, should be widely offered at HWC-SHC in order to address the increasing prevalence of chronic diseases.

Nipah outbreak

Nipah virus disease is not a major outbreak. It is only a local occurrence. Following directions of the Union Health Minister, Shri J P Nadda, a multi-disciplinary Central Team led by the National Centre for Disease Control (NCDC) is presently in Kerala constantly reviewing the situation of the Nipah Virus Disease.

After reviewing the cases of all the patients who have lost their lives, the Central High-level Team is of the view that the Nipah virus disease is not a major outbreak and is only a local occurrence. The Team has also further fine-tuned the draft guidelines, case definitions, advisory for healthcare workers, information to the general public, advisories for sample collection and transportation accordingly.

New Specified Health Warning on Tobacco Products packs

The Ministry of Health and Family Welfare, Government of India has notified new sets of specified health warnings for all tobacco product packs by making an amendment in the Cigarettes and other Tobacco Products (Packaging and Labeling) Rules, 2008 vide GSR 331(E) dated 3rd April 2018 *"Cigarettes and other Tobacco Products (Packaging and Labeling) Second Amendment Rules, 2018"*. The amended Rules will be applicable w.e.f. 1st September 2018.

View Details »

4th INTERNATIONAL
DAY OF YOGA
2018
21st June 2018
International Day of Yoga
21 June
Yoga for Harmony & Peace
Give a Missed Call on
97118-55005
to support INTERNATIONAL DAY OF YOGA

WORLD BLOOD DONOR DAY
14TH JUNE
BLOOD DONATION
SAVE LIFE

WORLD ENVIRONMENT DAY 2018
BEAT
PLASTIC
POLLUTION
5 JUNE

26 June
"A Friend In Deed,
Won'T Make You
Smoke That Weed!"
International Day Against
Drug abuse & illicit Trafficking

WORLD DAY TO COMBAT
DESERTIFICATION AND DROUGHT
17 JUNE
Land has true value.
Invest in it

Pradhan Mantri Matru Vandana Yojana (PMMVY)

The Pradhan Mantri Matru Vandana Yojana was announced in the Prime Minister's address to the nation on 31st December 2016 to benefit pregnant women and lactating mothers. The basic features of the scheme is given in following table.

Effective Date	1st January 2017
Eligibility	Pregnant Women and Lactating Mothers (PW&LM) for first live child in family
Benefits	₹5,000 Payable in Three Instalments.
Implementing Platform	Integrated Child Development Services /Health Infrastructure
Implementing Departments	Department of Women and Child Development or Department of Social Welfare of the respective State/UT except for seven states/UT. Department of Health or Department of Health and Family Welfare will administer the scheme in the states of Andhra Pradesh, Chandigarh, Dadar & Nagar Haveli, Daman & Diu, Meghalaya, Tamil Nadu, Telangana, Uttar Pradesh and West Bengal

Instalment	Conditions	Documents Required	Amount (In ₹)
First Instalment	Requires mother to:- · Register her pregnancy in the MCP card along with required documents within 150 days from LMP.	• Duly filled Application **Form 1A** • Copy of MCP Card • Copy of Identity Proof • Copy of Bank/Post Office Account Passbook	**₹ 1,000**
Second Instalment	- At least one Ante Natal Check Up - Can be claimed post 180 days of Preg.	• Duly filled Application **Form 1 B** • Copy of MCP Card	**₹ 2,000**
Third Instalment	· Child Birth is registered. · Child has received first cycle of immunizations of BCG,OPV,DPT and Hepatatis B. · Aadhaar is mandatory in all states except for J&K, Assam, Meghalaya	Duly filled Application Form 1C • Copy of MCP Card • Copy of Aadhaar ID • Copy of Child Birth Registration Certificate	**₹2,000**

KEY PERSON

Dr. Ankesh Dhirawat

मोबाईल नंबर:- 8890020229
मूल पता:- CHC Ghatol Dist. Banswara (Raj.)
मेडिकल कॉलेज का नाम, प्रवेश वर्ष:- SMS MC JAIPUR 2005
वर्तमान पदस्थापना संस्थान:- CHC Ghatol Dist. Banswara (Raj.)
वर्तमान संस्थान कों जॉईन करने का माह एवं वर्ष:- Dec. 2011

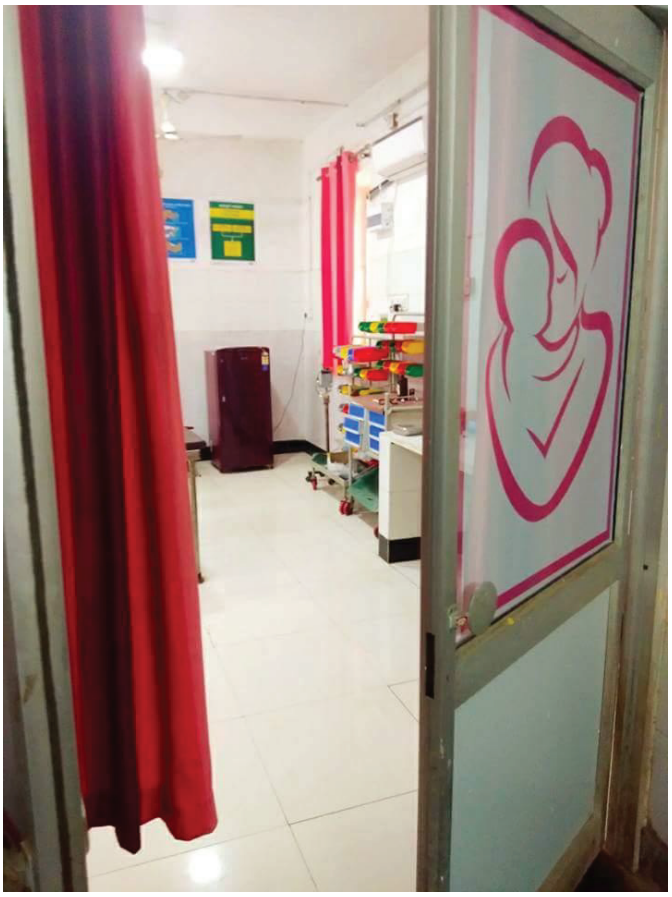

आपके इस संस्थान में कार्यभार सम्हालने के पहले आकड़े अथवा हालत -
OPD:- **< 25000** / Year
IPD:- **< 200** / Month
Delievery:- **< 75**/ Month
आपके इस संस्थान में कार्यभार सम्हालने के उपरांत आकडे अथवा बदलाव -
OPD:- **> 70,000** / Year
IPD:- **> 300** / Month
Delievery:- **> 150-200** / Month

आपके द्वारा किये गये महत्वपूर्ण कार्य जिनसे यह बदलाव आया
लेबर रुम दक्षता प्रोटोकाल अनुसार नया बनवाया | ANC,PNC, वार्ड नये बनवाये | Telemedicine, Teleophthalmology, स्टार्ट करवाया |

इस बदलाव कों लाने में क्या कुछ परेशानिया आई ? उनसे केसे निपटे ?
समस्त स्टाफ एवं उच्चअधिकारियो ने मिलकर यह बदलाव लाये

प्रेरणा कहाँ से व कैसे मिली ?
समय-समय पर हमोर BCMO डॉ. शाहनवाज खान एवं CMHO डॉ. ओपी कुलदीप द्वारा मार्गदर्शन दिया गया |

अन्य चिकित्सो कों क्या सलाह देना चाहेंगे ?
अपना कार्य इस प्रकार करे कि सरकारी चिकित्सालय भी प्राइवेट जैसी सुविधाएँ एवं उससे बेहतर सुविधाएँ दे |

विस्तृत खबर के लिए यहाँ क्लिक करें »

चिकित्सा अधिकारीयों की नयी भर्ती हेतु घमासान

पिछले कुछ वर्षों में चिकित्सकों के लिए हुई समस्त भर्तियों में ऐसा देखा जाता रहा है की जितने पदों के लिए भर्ती होनी थी उनके मुकाबले काफी कम अभ्यर्थी आवेदन करते थे।
परन्तु इस साल की 894 पदों पर होने वाली चिकित्सा अधिकारीयों की भर्ती में भारी तादाद में करीब 2800 अभ्यर्थीयों ने आवेदन किया एवं अधिकांश ने परीक्षा भी दी लेकिन ज्यादातर को लग रहा है की इस बार राजस्थान सरकार में चिकित्सा अधिकारी बनने की राह आसान नहीं है, इसी बीच कुछ अभ्यर्थी पदों की संख्या को बढवाने के लिए चिकित्सा मंत्री तक पहुँच चुके हैं, जबकि इसी बीच चिकित्सा मंत्री का विवादित बयान भी सामने आया है जिसमें उन्होंने कहा है की "भगवान जाने, डॉक्टर सरकारी नौकरी जॉइन क्यूँ नहीं करते"।

एफआरयु केन्द्रों पर विषय विशेषज्ञों की संविदा भर्ती

प्रदेश के बहुत से दूरस्थ एफआरयु केन्द्रों पर विशेषज्ञों के पद सामान्यतया खाली रहते हैं चूँकि यहाँ चिकित्सकों के लिए सुविधाओं का अभाव रहता है, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग ने इस रिक्त पदों को भरने के लिए मई के पहले सप्ताह में आवेदन मांगे तथा आवेदन करने अभ्यर्थियों की काउंसलिंग जून के प्रथम सप्ताह में रखी गयी है जिसमें निम्न संख्या में विशेषज्ञ उपस्थित होंगें
निश्चेतन - 40
महिला एवं प्रसूति - 32
शिशु रोग - 21
रेडियो-डायग्नोसिस - 3

पीजी मेडिकल एवं दंत 2018 की काउंसलिंग एवं कॉलेजों में जोइनिंग संपन्न

पीजी कोर्सेज में दाखिले हेतु प्रथम काउंसलिंग अप्रेल में संपन्न हुई जिसमें नॉन-नोटिफाइड इन सर्विस कैंडिडेट्स को बोनस अंक से वंचित रहना पड़ा था, तत्पश्चात मई के द्वितीय सप्ताह में द्वितीय राउंड काउंसलिंग हुई तथा उसके बाद मोप अप राउंड संपन्न हुआ, इन दोनों में रूरल क्षेत्र में कार्यरत सेवारत चिकित्सकों को बोनस अंक दिए गये। चूँकि मामला हर बार कोर्ट व नियमों में उलझता है, जिससे परेशान एवं भयभीत सेवारत चिकित्सकों में सीट लेने की लूट मच गयी और लगभग सभी सीटें भर गयी, जबकि पिछली साल 74 सीटें बची रह गयी थी। बची हुई सीटों के लिए 30 मई को ओपन राउंड काउंसलिंग आल इंडिया रेंक के बेसिस पर हुई, जिसमें कुछ अभ्यर्थियों ने नाराजगी जाहिर करते हुए कहा की इस राउंड में इन सर्विस कैंडिडेट्स को बोनस अंक देते हुए स्टेट रेंक से काउंसलिंग होनी चाहिए थी। 31 मई जोइनिंग का अंतिम दिवस होता है और इस के बाद बची सीटों को लेप्स माना जाता है|

First Referral Unit

It is a district or sub-divisional hospital or community health centre which has the facilities for obstetric surgery, blood transfusion, anaesthesia, specialist pediatric care, operation theatre and required equipment. This centre also has the facilities for MTP, tubectomy, vasectomy and pediatric care for high risk neonates and other severe problems of early childhood. It provides specialist services in addition to all the services available at a PHC.

Specialist Services available at FRU:

Surgical:
- Caesarian section
- Laparotomy and repair of ruptured uterus
- Surgical treatment of severe sepsis
- Evaluation of incomplete abortion
- Mid-trimester abortion
- Repair of cervical and vaginal tears
- Amniotomy with/ without oxytocin
- Tubectomy/vasectomy

Medical Management of:
- Severe hypertensive disorders of pregnancy, eclampsia
- Hemorrhagic shock
- Severe anaemia
- Septicemia
- Use of iv oxytocin during labour

Newborn and Pediatric Care:
- Resuscitation
- Management of sick newborns and severe illnesses of young children

Manual:
- Manual removal of placenta
- Forceps delivery
- Vacuum extraction
- Partography

Anaesthesia:
- General, spinal

Blood Transfusion:
- Bleeding a donor and blood transfusion
- Performing mandatory tests

आरएनटी मेडिकल कॉलेज में रेजिडेंट्स की सभी जांचें हुई फ्री

आरएनटी मेडिकल कॉलेज प्रशासन ने एक शानदार कदम उठाते हुए आरएमआरएस की बैठक में प्रस्ताव पारित करते हुए रेजिडेंट डॉक्टरों की सभी जांचें फ्री कर दी हैं, इस पर रेजिडेंट्स ने ख़ुशी जताई है। आशा है की अन्य मेडिकल कॉलेज के रेजिडेंट्स के लिए भी जल्द समान आदेश जारी होंगे, जरुरत है की सभी सरकारी चिकित्सकों की सभी जांचें सभी अस्पतालों और मेडिकल कॉलेजों में मुफ्त हों।

विस्तृत खबर के लिए यहाँ क्लिक करें »

पानी के लिए परेशान भावी डॉक्टर

सरदार पटेल मेडिकल कॉलेज,बीकानेर के होस्टल में लगातार पानी की समस्या से जूझ रहे छात्रों को आखिरकार आंदोलन का सहारा लेना पड़ा और छात्र तौलिया और बाल्टी लेकर प्रिंसिपल ऑफिस पहुंच गए। हॉस्टल्स की हालत बहुत नाजुक है देश के भावी डॉक्टर्स सुविधाओं के अभाव में जी रहे है ना उपयुक्त नहाने धोने के लिए पानी है और ना ही प्रशासन के द्वारा पीने के पानी की सुचारू व्यवस्था करवाई जा रही है ,छात्रों को खुद के दम पर ही पानी के कैंपर मंगवाने पड़ते है। छात्रों में भयंकर रोष देखा गया है, हालाँकि आन्दोलन के बाद कॉलेज प्रशासन की आँखें खुली हैं।

विस्तृत खबर के लिए यहाँ क्लिक करें »

आगामी माह में निम्न परीक्षाएं प्रस्तावित हैं

पीजी कोर्सेज की परीक्षाएं मई-जून में होनी हैं, सभी के प्रेक्टिकल्स जून में होंगें। एमबीबीएस सेकंड इयर की लिखित परीक्षा 11 जून से, फाइनल इयर पार्ट 1 & 2 की लिखित परीक्षाएं 6 जून से प्रारंभ होना प्रस्तावित हैं, प्रेक्टिकल परीक्षाओं का प्रोग्राम कॉलेज वार अलग अलग जारी होगा।

विस्तृत खबर के लिए यहाँ क्लिक करें »

मेडिकल कॉलेजों में लगेंगे आरएएस अधिकारी

चिकित्सा विभाग में खुलने वाले नए सरकारी मेडिकल कॉलेजों के लिए गठित राजस्थान मेडिकल एजुकेशन सोसाइटी के निदेशक पद पर हायर सुपर टाइम स्केल के आरएएस को लगाने की स्वीकृति जारी कर दी गयी है। सोसायटी में अतिरिक्त निदेशक शैक्षणिक (प्रोफेसर के बराबर), दो पद उपनिदेशक शैक्षणिक (असोसिएट के बराबर) के होंगें, उपनिदेशक प्रशासन के एक पद पर सलेक्शन स्तर का आरएएस लगाया जाएगा। प्रतिनियुक्ति पर आठ वरिष्ठ विधि अधिकारी, जयपुर सहित सात पुरानी मेडिकल कॉलेजों में लगाये जायेंगे। इसके खिलाफ आरएमसीटीए ने विरोध पत्र जारी किया है तथा रेजिडेंट्स यूनियनों ने हड़ताल ही चेतावनी जारी की है।

विस्तृत खबर के लिए यहाँ क्लिक करें »

पैसिफिक मेडिकल कॉलेज में इस सत्र में नहीं होंगें एडमिशन, लगी रोक

एमसीआई के निरिक्षण में भारी कमियां पाए जाने पर चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्रालय, भारत सरकार ने पैसिफिक मेडिकल कॉलेज, उदयपुर के एमबीबीएस के चौथे बैच (2018-19) की 150 सीटों पर प्रवेश देने पर रोक लगा दी है, हालाँकि कॉलेज प्रशासन ने कोर्ट में जाकर कोशिश की थी की कैसे ना कैसे वो एडमिशन करवा पाए पर उन्हें हर तरफ से निराशा ही हाथ लगी, आवश्यक है की प्राइवेट कॉलेजेज में सभी सुविधाएँ और स्टाफ पूरे हों।

विस्तृत खबर के लिए यहाँ क्लिक करें »

दूल्हा हेलिकोप्टर में, चिकित्सक एम्बुलेंस में

हाल ही में अलवर में चिकित्सा विभाग की तरफ से निकला एक आदेश देशभर में चर्चा का विषय बना हुआ है, इस आदेश के अनुसार एक दुल्हे राजा हेलिकोप्टर में सवार होकर दुल्हनिया लेने आ रहे हैं, दुल्हे-दुल्हन से कोई शिकायत नहीं लेकिन हेलिकोप्टर आ रहा है इसके चक्कर में हेलीपेड पर दो चिकित्सकों की मय स्टाफ और एम्बुलेंस ड्यूटी लगा दी की कोई हादसा होने की स्थिति में ये काम में आवें, भाई दो डॉक्टर, स्टाफ और एम्बुलेंस अपनी ड्यूटी करते तो कितने मरीजों का भला होता, और नहीं तो हेलीपेड अस्पताल के पास ही बना देते.. अधिकारी कहते हैं की दुल्हे ने पूरे स्टाफ की फीस जमा करवाई है।

डायबिटीज की फौलादी दवा

बहुत सुनने में आता है की दवा के पैकेट में गोली नहीं निकली या फिर खोलते ही बिखर गयी या गोली का पाउडर बन गया लेकिन इस बार कोटा में चिकित्सा विभाग ने फौलादी कारनामा किया है, यहाँ डायबिटीज के मरीज को दी गयी टेबलेट इतनी मजबूत है की यह पानी में घुलती ही नहीं, कम से कम तीन दिन तो नहीं। अब पेट का मालताल तो एक दिन में बाहर आ जाता है तो फिर यह गोली भी ज्यों की त्यों आ जाती होगी, कुछ ने इस गोली को री-यूजेब गोली बताया जबकि कुछ का कहना है की लैब में गोली का कंटेंट जांचने के साथ इसकी हथौड़ा टेस्टिंग भी की जानी चाहिए। जासूस गोपीचंद का सवाल है की मरीज को पता कैसे चला की यह गोली घुलती नहीं है, सीधा निकलती है?

पीजी की राह में बड़े बाबु जी का रोड़ा

उदयपुर में बड़े बाबूजी ने फरमा दिया की इन सर्विस कैंडिडेट्स को ग्रामीण सेवा का सर्टिफिकेट उनसे पूछ के दिया जाए, फिर अचानक कहते हैं की जिनकी सेवा दो साल से कम है उन्हें पीजी के लिए रिलीव ही नहीं किया जाये, सुना है सब रिलीव होकर कॉलेजों में जॉइन भी कर चुके हैं।

झोलाछाप पत्रकार पर बीसीएमओ का प्रहार

अधिकांश पत्रकार बने घूम रहे लोगों से डिग्री मांगने पर शायद ही वो बारहवीं से आगे का कुछ पेश कर पायें लेकिन कैमरा और कलम का रौब पूरा रखते हैं, छोटे कर्मचारी तो छोडो बड़ों से भी विआइपी ट्रीटमेंट चाहते हैं, कई बार धमकाने से ब्लेकमेल तक के केस देखे जाते हैं, लेकिन बांसवाडा में एक पत्रकार की हेकड़ी उसी पर भारी पड़ गयी जब दबंग बीसीएमओ ने उसकी दादागिरी के खिलाफ पुलिस में एफआईआर देदी। बीसीएमओ शाहब ने कई बड़े अधिकारीयों को आइना दिखाया तो छोटों के सामने नजीर पेश कर दी।

मंत्रोपैथी से गारंटी इलाज

सोशियल मीडिया पर एक बाबा जी (ओझा जी) वायरल हो रखे हैं जो थके हुए मरीजों का मन्त्रों से इलाज करने का दावा करते हैं, बाबाजी मरीजों को NBM (भूखे पेट भी बुलाते हैं), क्यूंकि भूखे पेट भजन ना हों तो क्या हुआ मंत्र तो हो ही जाते होंगें। एक भक्त/मरीज पूछते हैं की बाबा इन मन्त्रों की कोई सीडी हो तो भिजवा दो, एक भक्त ने तो व्हाट्सएप पर मंत्र मंगवाकर उसकी रिंगटोन बना ली है, पूरे मोहल्ले की गठियाबाय ठीक हो गयी है।

मेडिकेयर रिलीफ सोसायटी के अध्यक्ष होंगें चिकित्सा विभाग के अधिकारी

वर्ष 1995 से अस्पतालों के सफल संचालन, वित्तीय विषयों में पारदर्शिता लाने और जनभागिता करने के लिए राजस्थान मेडिकेयर रिलीफ सोसायटियों का गठन किया गया जो की सोसायटी एक्ट के तहत रजिस्टर की जाती हैं। इनके सदस्य सचिव पद पर चिकित्सक को नियुक्त किया जाता है परन्तु अध्यक्ष पद पर रेवेन्यु विभाग के अधिकारीयों को नियुक्त किया जाता था, अन्य विभाग के अधिकारीयों को अस्पताल प्रबंधन की आवश्यक गहराई पता नहीं होती थी एवं अधिकांशत या तो ये इसकी बैठक में आते नहीं थे या फिर चिकित्सक रजिस्टर लेके साइनों के लिए दौड़ते दिखा करते थे, इसीलिए चिकित्सकों के आन्दोलन में यह एक महत्वपूर्ण मुद्दा बनी और इस मांग को मानकर चिकित्सकों को ही अध्यक्ष बनाने के आदेश जारी हुए, किन्हीं अस्पतालों की कार्यकारिणी में बदलाव नहीं किया गया हो तो उन्हें नवीन मीटिंग बुलाकर प्रस्ताव ले लेना चाहिए। अब पीएचसी स्तर पर बीसीएमओ एवं सीएचसी स्तर पर सीएमएचओ हुआ करेंगे अध्यक्ष।

विस्तृत खबर के लिए यहाँ क्लिक करें »

लास्ट पे सर्टिफिकेट (एलपीसी) क्यूँ है महत्वपूर्ण ?

सेवारत चिकित्सक जब पीजी कोर्स में कोटे से प्रवेश लेकर मेडिकल कॉलेजेज में डिग्री/डिप्लोमा करने के लिए जाते हैं तो उन्हें "स्टडी लीव" देकर विभाग से कार्यमुक्त कर दिया जाता है और उन्हें मेडिकल कॉलेज में स्टूडेंट मानकर वहां से 'स्टाइपेंड' दिया जाता है तथा पूर्व में मिल रही तनख्वाह का आधा हिस्सा अतिरिक्त दिया जाता है। आधी तनख्वाह की गणना के लिए पूर्ववर्ती डीडीओ की तरफ से लास्ट पे सर्टिफिकेट जारी किया जाता है इसी के अनुसार उन्हें डिग्री/डिप्लोमा के दौरान तनख्वाह दी जाती है, डिग्री/डिप्लोमा पूरा होने के बाद वापस पैत्रक विभाग में लौटने के बाद इस पढाई के दौरान के इन्क्रीमेंट आदि लाभ दिए जाते हैं।

विस्तृत खबर के लिए यहाँ क्लिक करें »

एमएलसी कार्य के लिए पुलिस अप्लिकेशन पर आवश्यक हैं डिस्पेच/मुकदमा नंबर

चिकित्सकों को जिस क्षेत्र में सबसे ज्यादा सतर्क रहने की आवश्यकता है वह है मेडिको लीगल कार्य, क्यूंकि इसमें एक छोटी सी गलती या लापरवाही भारी पड़ सकती है। अक्सर पुलिस आपके सामने एक तहरीर प्रस्तुत करती है जिसमें ना कोई डिस्पेच नम्बर होता है और ना ही कोई मुकदमा संख्या, समझदार और मंझे हुए साथी तो हमेशा से डिस्पेच नंबर के साथ ही तहरीर लेते हैं अथवा फोन करवाकर पुलिस वाले से थाने से डिस्पेच नंबर मंगवाते हैं लेकिन नए साथी जानकारी के अभाव में या खाकी के प्रभाव में आकर कई बार अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारते हैं और बिना किसी क्रमांक के ही एमएलसी रिपोर्ट जारी कर देते हैं, इसके लिए कई बार डॉक्टर जजों से डांट खाते हैं और माफ़ी मांगते हैं। 23 जनवरी 2018 के आदेश में (पूर्व में भी) निदेशक जन स्वास्थ्य ने स्पष्ट किया है की कोई भी तहरीर अगर "मुकदमा नंबर मय धारा" के प्रस्तुत की जाती है तो केवल उसी स्थिति मे एमएलसी रिपोर्ट जारी की जानी है और बनाई गयी रिपोर्ट्स की मासिक सुचना निदेशक को भिजवाई जानी है जिसमें "मुकदमा नंबर मय धारा" का उल्लेख अलग से करना है।

विस्तृत खबर के लिए यहाँ क्लिक करें »

Head Office
112A, Nirman Nagar, Jaipur – 302019
e-mail: sarkaridoctor@gmail.com
Printed and published by Sarkari Doctor.

Published for month of May, 2018
Release on June 20, 2018
Total no. of pages 10, Including Covers

GOT NEWS? GOT TIPS? GOT PHOTOS?

Tell us what's happening. Remember to tell Who, What, When, Where. You can send us an article, news, information or photos if you like.
Email your stories and comments to **sarkaridoctor@gmail.com**
We will read all of your emails.
Email your pictures, video or audio to us.
In some cases your images or audio may be used in our Newsletter.
If we use your material online we will not publish your name as you provide it (if you want to publish than we may do so) but we will never publish your email address.